परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा भी है–उद्योगी पुरुष सिंह को लक्ष्मी वरण करती है। जो भाग्यवादी हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता। वे हाथ-पर-हाथ धरे रह जाते हैं। अवसर उनके सामने से निकल जाता है। भाग्य कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम है।

प्रकृति को ही देखिए। सारे जड़-चेतन अपने कार्य में लगे रहते हैं। चींटी को भी पल-भर चैन नहीं। मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूँद-बूँद मधु जुटाती है। मुरगे को सुबह बाँग लगानी ही है। फिर मनुष्य को बुद्धि मिली है, विवेक मिला है। वह निठल्ला बैठे तो सफलता की कामना करना व्यर्थ है।

विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं, उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है। जापान को दूसरे विश्व युद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था। उसकी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी। दिन-रात जी-तोड़ श्रम करके वह पुनः विश्व का प्रमुख औद्योगिक देश बन गया। चीन को शोषण से मुक्ति भारत से देर में मिली, वह भी श्रम के बल पर आज भारत से आगे निकल गया है। जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिकाएँ झेलीं, पर श्रम के बल पर सँभल गया।

प्रश्न– 1. उपयुक्त शीर्षक दीजिए–

(क) सफलता की कुंजी (ख) सफलता और परिश्रम

(ग) गतिमान रहो (घ) परिश्रम सफलता का आधार।

2. *'हाथ पर हाथ धरना'* का आशय है–

(क) निकम्मे बैठना (ख) आलसी होना (ग) आराम करना (घ) भाग्यवादी होना।

3. *'छिन्न-भिन्न'* में कौन-सा समास है ?

(क) तत्पुरुष (ख) द्विगु (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय।

4. लक्ष्मी किसके पास आती है ?

(क) सिंह के पास (ख) बहादुर के पास

(ग) परिश्रमी के पास (घ) उद्योगपति के पास।

5. जापान के साथ क्या दुर्घटना घटी थी ?

(क) वह विश्वयुद्ध में हार गया था (ख) वह मिट्टी के नीचे दब गया था

(ग) वह खंडहर हो गया था (घ) वह युद्ध में नष्ट हो गया था।